परमेश्वर ने हमारी भूमि को चंगाई प्रदान क्यों करनी चाहिए ?

लेखक : रेवरेंड जॉयसन. के. सी

अनुवादक : रेवरेंड नंदिता ड्यूप्रैट

AIM की पत्रिका में प्रकाशित किया गया, मई २०२०

हमारे लिए अपने राष्ट्रीय गान को गाना एक अत्यंत प्रिय बात है और हम इसे गाते समय अभिमान महसूस करते हैं | जब भी मैं इसे सुनता हूँ मुझे अत्यधिक आनंद का अनुभव होता है | इसके रचयिता सम्माननीय श्रीमान रवीन्द्रनाथ टैगोर हैं, जो भारत के दिग्गज साहित्यकारों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं | मैं अपने राष्ट्रगान के कुछ छंदों को प्रस्तुत करना चाहता हूँ ताकि हम इसके अर्थ को पुनः स्मरण कर सके |

जन-गण-मन अधिनायक जय हे

भारत-भाग्य-विधाता |

आप सब के मस्तिष्क के शासक हैं, जीत आपके साथ रहे | आप भारत के भाग्य का विधाता हैं |

तव शुभ नामे जागे,

तव शुभ आशिष माँगे;

गाहे तव जय गाथा |

आपके शुभ नाम को सुनकर जाग जाएँ और आप से आशीर्वाद पाने के लिए प्रार्थना करें, सभी लोगों की सुरक्षा आपके हाथ में हैं|

जन-गण मंगलदायक जय हे,

भारत – भाग्य-विधाता |

आप मंगल जीवन के दाता हैं | आप ही भारत के भाग्य विधाता हैं |

हम मसीहियों की भारत के लिए बिलकुल यही तो प्रार्थना हैं | हम इस संसार के शासक से, जो भारत का भाग्य विधाता है, यही प्रार्थना करते हैं | भारत पर परमेश्वर का आशीष बना रहे यह प्रार्थना करते हैं | हम प्रार्थना करते हैं कि मसीह यीशु सभी लोगों को बचाए | हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमारे देश को सुरक्षित रखें क्योंकि उसीके हाथ में हमारे प्रिय भारत देश की नियति है |

परन्तु प्रश्न यह है –

क्या परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनने के लिए बाध्य है?

क्या हमारी जाति दूसरों की तुलना में उच्च है?

क्या हम बौद्धिक रूप से दूसरों से उच्च हैं ?

क्या हम नैतिक दृष्टि से दूसरों से बेहतर है?

द्वितीय महायुद्ध के समय डॉ पीटर मार्शल ने अमेरिका के निवासियों से अपने प्रवचन/धर्मोपदेश के माध्यम से पूछा, “परमेश्वर ने अमेरिका को आशीषित क्यों करना चाहिए?” हम किसी युद्ध–स्थिति का तो सामना नहीं कर रहे हैं परन्तु एक ऐसी विश्व-व्यापी बीमारी का सामना कर रहे हैं जो द्वितीय महायुद्ध के समय से भी अधिक लोगों को और अधिक राष्ट्रों को प्रभावित कर रही है| और ये ही सवाल आज भारत की कलीसियाओं के लिए प्रासंगिक हैं | दरअसल ये हर राष्ट्र की कलीसियाओं के लिए संगत हैं| मैं डॉ पीटर मार्शल के निम्नलिखित विचारणीय प्रश्नों के लिए उनका अति शुक्रगुज़ार हूँ |

- परमेश्वर ने हमारी प्रार्थना क्यों सुननी चाहिए ?
- परमेश्वर ने हमारी करुण पुकार को प्रतिसाद क्यों देना चाहिए ?
- परमेश्वर ने भारत पर अपनी करुणा दृष्टि क्यों फेरनी चाहिए ?
- परमेश्वर ने हमारी भूमि को क्यों चंगा करना चाहिए ?

- क्या अपने अहंकार की वजह से हम यह सोचने लगे हैं कि हम इस योग्य हैं कि परमेश्वर हमारे देश को चंगाई प्रदान करें ?

अब हम अपना ध्यान **२ इतिहास ७:१४** पर लगाएँ –" **तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं , दीन हो कर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी हो कर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनके पापों को क्षमा करूँगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूँगा।"**

आज देश के लोगों के सामने लाने-योग्य शायद यह सबसे महत्वपूर्ण वचन है। चाहे हम किसी भी राज्य के प्रति निष्ठावान हो, यह बुलाहट हम सभी के लिए हैं।

पंजाब-सिद्ध-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विन्ध्य-हिमाचल,यमुना-गंगा

यह प्रतिध्वनि विन्ध्य पर्वत और हिमालय पर्वत में गूँज रही है और यही संगीत यमुना और गंगा में भी घुलमिल गई है |
चाहे आप किसी भी मजहब के हो- हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, जैन, सिक्ख, ज़रथुसट्र और नास्तिक भी–सारे परमेश्वर द्वारा बनाए गए हैं इसलिए वे परमेश्वर के हैं | यह बुलाहट खासकर भारतीय मसीहियों के लिए हैं जो मसीह के नाम से जाने जाते हैं | परन्तु इससे पहले कि हम देश की चंगाई-प्राप्ति के चार शर्तों के बारे में जाने यह स्पष्ट जान ले कि यह जो वर्तमान संकट-काल हैं इसे हम परमेश्वर का कोपजन्य न्याय समझने की जल्दबाज़ी न करें। ऐसी धारणा न केवल अवधिपूर्व है अपितु पक्षपातपूर्ण और हानिकारक भी है। हम इसलिए परमेश्वर की चंगाई को खोजते हैं क्योंकि हम भले ही कमज़ोर और सीमित हो, परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और वही आरोग्य प्रदान कर सकता है | हम खुद के बल पर यह पा नहीं सकते हैं | चलिए अब देखें इस परमेश्वर-प्रदत्त चंगाई को पाने की चार शर्तें कौन सी हैं-

1. पहली शर्त यह है कि परमेश्वर के लोगों ने अपने आपको विनीत करना चाहिए।

आज का मानव एक अभूतपूर्व सफलता के युग में जी रहा है | ये स्व-रचित स्त्री और पुरुषों का ज़माना है। अपनी उपलब्धियों और कामयाबियों के कारण हम मदमस्त हो गए हैं। विनम्रता और कृतज्ञता अब अनायास नहीं आती। परन्तु यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमारी धरती को चंगा करे तो पहली शर्त यह है कि हम विनम्र बनें। अहंकार हमारे दोषों को ढँकने का प्रयास करता है, इसलिए पतन होना स्वाभाविक है | दूसरी ओर विनम्रता सच्चाई को उजागर कर देता है, इसलिए वह विकास का पक्का मार्ग है |
एफ.बी. मायर ने एक दिन कहा, "मुझे लगता था कि परमेश्वर के वरदान ताक पर एक के ऊपर एक रखे रहते हैं; तथा जैसे-जैसे हम मसीही चरित्र में बढ़ते जाते हैं वैसे-वैसे इन तक पहुँचना आसान हो जाता है | आज मुझे बोध हुआ कि परमेश्वर के वरदान ताक पर एक के नीचे एक रखे गए हैं क्योंकि सवाल यहाँ ऊँचे उठने का नहीं परन्तु नीचे झुकने का है; उसके सर्वोत्तम वरदानों को पाने के लिए अधिकाधिक नीचे झुकना पड़ता है |"
विनम्रता का अर्थ खुद का निरादर या मानहानि नहीं अपितु परमेश्वर के प्रति सहर्ष आत्मसमर्पण करना है और उसे अपने जीवन का प्रभु बनाना है। जब हम अपने आप को नम्र करते हैं तब हम यह कबूल करते हैं कि परमेश्वर हमारे जीवन की परिस्थितियों का ख्याल कर सकता है। क्योंकि परमेश्वर का अभिवचन है, "अपने-आपको परमेश्वर की नज़रों में नम्र करो और वह तुम्हें ऊँचाई तक पहुँचाएगा।"(याकूब ४:१०)

2. दूसरी शर्त यह है कि परमेश्वर के लोगों ने प्रार्थना करनी चाहिए।

परमेश्वर हमेशा प्रार्थना भर की दूरी पर है | परन्तु आज की त्रासदी अनुत्तरित प्रार्थना नहीं परन्तु अनर्पित प्रार्थना है | प्रार्थना छोड़कर हम दिन भर में बहुत कुछ करते हैं | हम में से कई तो प्रार्थना की इच्छा भी गँवा बैठे हैं | आज यदि हमें कलीसिया का समाज पर अधिक प्रभाव नहीं दिखता है, उसके लिए एक ही कारण है– कलीसिया में प्रार्थना का अभाव।

तथापि यदि आज हम परिस्थिति-वश अपने घुटनों पर आ गए हैं, यह प्रार्थना के लिए सर्वोत्तम आसन है। घुटने टेकने की वजह से ही हम चिंताओं के बोझ तले दब नहीं रहे हैं। प्रार्थना कमज़ोर व्यक्ति को ताकत और भयभीत व्यक्ति को साहस देता है। कुढ़न से व्यक्ति अपनी समस्या को आवर्धित करता है परन्तु प्रार्थना परमेश्वर को आवर्धित करता है |

जब हम इस वैश्विक महामारी के हाथों अपने आपको अत्यंत असहाय पाते हैं, इससे बढ़कर प्रार्थना के लिए कोई और दिन नहीं हो सकता है। प्रार्थना से ही हमें एहसास होता है कि परमेश्वर सारे आशीषों का ज़रिया है | इससे मानो हम उसपर अपनी निर्भरता की घोषणा करते हैं | किसी ने कहा है- जब हम काम करते हैं, केवल हम काम करते हैं ; परन्तु जब हम प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर काम करता है | हम अपने पैरों पर तभी खड़े रह सकते हैं जब हम अपने घुटनों के बल झुकते हैं।

3. तीसरी शर्त यह है परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के दर्शन के खोजी होना चाहिए।

इसका तात्पर्य है परमेश्वर की ओर मुड़ना और उसके पास लौटकर आना। आज हमारा देश 'तालाबंदी प्रणाली' में है और हम 'सामाजिक दूरी' का पालन कर रहे हैं। परन्तु परमेश्वर के दर्शन के लिए हमें कहीं भी और किसी के भी पास जाने की ज़रूरत नहीं है। परमेश्वर हमारे बहुत ही समीप है लेकिन अन्य कई विकर्षणों के कारण हम इससे बेखबर हैं। ऐसे विकट समय इस बात के संकेत देते हैं कि परमेश्वर के लोग जीवन के विविध बातों में मदद और उद्देश्य न ढूँढे।

पवित्र बाइबिल यह घोषित करता है कि परमेश्वर हमारा महान चिकित्सक/वैद्य है।(निर्गम १५:२६) प्रतीक्षा कक्ष में रुके रहने से चंगाई नहीं मिलती है; हमें कमरे में प्रवेश कर डॉक्टर को दिखाना पड़ता है। परमेश्वर को खोजना केवल **उसके बारे** में जानना नहीं, **उसको** जानने की इच्छा होती है। यह अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा जानने का प्रयास है और अपने व्यवहार के लिए उसका मार्गदर्शन पाने की कोशिश है। अपनी नैतिकता के लिए परमेश्वर का मानक ढूँढने का यह प्रयास है। वास्तविकता तो यह है कि हम इसके बारे में जानते है। अब केवल इसे प्रयोग में लाने के लिए पवित्र आत्मा के सामर्थ्य की आवश्यकता है।

जितना अधिक हम परमेश्वर के मुख के खोजी बनेंगे उतना ही अधिक हम उसके लिए प्रकाशमान बनेंगे। ठीक उसी तरह जैसे चाँद सूरज की रोशनी को अंधकारमय आकाश में प्रतिबिंबित करता है। तब सचमुच हम अपने राष्ट्र के लिए आशीर्वाद साबित होंगे और हमारा राष्ट्र समस्त विश्व के लोगों के लिए आशीर्वाद सिद्ध होगा।

4. चौथी शर्त यह है कि परमेश्वर के लोगों को अपनी दुष्टताओं से मुड़ जाना चाहिए।

इन दिनों हम सफाई के प्रति ज़्यादा जागरूक हो गए हैं। हम अपने हाथों को बारंबार धोते हैं, प्रक्षालकों(sanitizers) का तथा विरंजक(bleach) पदार्थों का इस्तेमाल करते हैं। न तो हम स्वयं संक्रमित होना चाहते हैं न ही संक्रमण के वाहक बनना चाहते हैं। परन्तु अपने हृदय की सफाई के लिए हमने क्या किया ?

यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर अपनी इच्छानुसार हमें आशीषित करें तो हमें अपने हृदय के अन्दर झाँकना होगा और अपने दुष्ट कार्यों को त्यागना होगा। अपने राष्ट्र में व्याप्त ढोंग और पाप के संबंध में किसी को भी यकीन दिलाने की आवश्यकता नहीं है। जाति-प्रथा, गरीबी, उत्पीड़न, अधिकारों का दुरुपयोग, स्त्रियों और बच्चों का शारीरिक तथा यौन शोषण जैसे अन्य कई बातों से हम जकड़े हुए हैं। इनकी वजह से राष्ट्र के रूप में जो हमारी बुलाहट है उसे हम पूरा नहीं कर पा रहे हैं। क्योंकि उसका वचन कहता है, " जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता है और छोड़ भी देता है, उसपर दया की जाएगी।"(नीतिसूत्र २८:१३)

यह जो अपने आपको दीन करके प्रार्थना करने, परमेश्वर के दर्शन के खोजी होने तथा बुराइयों से मुड़ने की बुलाहट है यह केवल कोविद-१९ रुपी संकट-काल तक सीमित नहीं है। अपितु यह एक राष्ट्र को समृद्ध बनाने की योजना का पहला और अत्यावश्यक कदम है। राजनैतिक प्रक्रियाएँ, शैक्षणिक लाभ, प्रौद्योगिकी विकास और नागरिकों की निःस्वार्थ सेवा आदि किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक हैं। मगर विश्व की जो बिगड़ी हुई स्थिति है उसे सुधारने के लिए इतना काफी नहीं है। हमें परमेश्वर की ज़रूरत है जो हमारी भूमि को पूरी तरह से चंगा कर सके।

परन्तु कई लोगों का यह आक्षेप हो सकता है कि चाहे लोग अपने आपको नम्र कर प्रार्थना करें या न करें मनुष्य के प्रयास से अच्छे दिन तो आएँगे ही। हो सकता है कि उनकी सोच सही हो। भौतिक रूप से मनुष्य का विकास ज़रूर हो सकता है परन्तु जो नैतिक ह्रास और आत्मिक पतन होगा उसका न तो अंदाज़ नहीं लगाया जा सकता है न इलाज किया जा सकता है। भौतिक समृद्धि हमारे नैतिक विचारों को कुंद कर सकती है तथा राष्ट्रीय विवेक को मृत कर सकती है और संभव है कि परिणामस्वरूप हम उस स्वर्गीय आशीर्वाद से ही वंचित रह जाए जिसका संकल्प परमेश्वर ने हमारे लिए किया है।

ऐसी हालत में हम मनफिराव कैसे लाएँगे? हम क्या करें ? कहाँ से शुरुआत करें ? इसकी शुरुआत हम में से हर एक व्यक्ति से होती हैं। हमें किसी और के मनफिराव की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। यह मुझसे शुरू हो, यह आपसे शुरू हो। हम केवल सुननेवाले न बनें, करने वाले लोग बनें। क्योंकि यदि हम अपने आपको विनीत करेंगे और प्रार्थना करेंगे, और परमेश्वर के दर्शन के खोजी बनेंगे और बुराई करना बंद कर देंगे तो परमेश्वर हमारी भूमि के चंगाई प्रदान करेगा। चुनाव हमें करना है। आशा है कि हम इस महान चंगाई को देखने के लिए समर्पण करने को तैयार हो जाएँ।

परमेश्वर भारत को आशीषित करे! परमेश्वर कलीसिया को आशीषित करे! परमेश्वर आप को आशीषित करे!

(जॉयसन. के. सी धर्मशास्त्र और दर्शन शास्त्र में स्नाताकोत्तर उपाधि-प्राप्त हैं \ ये पुणे विश्वविद्यालय में पीएचडी के विद्वान हैं | ये मन्ना मिनिस्ट्रीज के दीक्षाप्राप्त उपाध्याय हैं | ये ई एफ आई (EFI) के सम्माननीय सदस्य भी हैं | अपनी उपाध्यक्षता के साथ-साथ ये सी एल एफ ए (CLFA) नामक युवा संचालन का मार्गदर्शन और अगुवाई भी करते हैं | उनसे संपर्क करें –joysermonsntalks@gmail.com)